ACHARYA SHRI MAHAPRAGYA PRAVAS VYAVSTHA SAMITI
OFFICE : JAIN VISHVA BHARATI CAMPUS, LADNUN 341 306
Tel. : 01581-223150 * **Fax :** 01581-222977

आचार्य महाप्रज्ञ ने दी सरकार को सलाह
नकस्लवाद को रोकना है तो अहिंसा प्रशिक्षण को समझें

लाडनूं 3 नवज़्बर।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने भारत सरकार द्वारा नकस्लवाद ज़त्म करने के सन्दर्भ में किये जा रहे प्रयासों एवं बचावों पर कहा कि सरकार को नकस्लवाद को रोकना है तो उसे अहिंसा प्रशिक्षण को समझना होगा। उन्होंने कहा कि गोली की भाषा से नकस्लवाद कभी खत्म नहीं हो सकता। नक्स्लवाद को जड़मूल से खत्म करने के लिए अहिंसा प्रशिक्षण कारगर हो सकता है।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने मीडिया के माध्यम से सरकार को संदेश देते हुए कहा कि नकस्लवाद को पैदा करने वाला समाज ही है। जब तक समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं को मिटाया नहीं जायेगा तब तक नकस्लवाद को पनपने से नहीं रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि जिसके भीतर प्रतिक्रियात्मक हिंसा जन्म ले लेती है वह खुद के गोली लगने से नहीं डरता है। आज अपेक्षित है उनके हृदय को बदला जाये और यह कार्य अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव है। आचार्य महाप्रज्ञ ने बिहार, झारखण्ड के जिन इलाकों में नकस्ली हिंसा ज्यादा है उन इलाकों में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र संचालित करने वाले अपने कार्यकर्त्ताओं की मिली रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि हमारे कार्यकर्त्ता नकस्लियों के मध्य जाते हैं और उन्हें प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाते हैं तो उन्हें जीवन की महत्ता का अहसास होता है। अहिंसा प्रशिक्षण के द्वारा ऐसे सैकड़ों हिंसक मनोवृत्ति वालों के हृदय को परिवर्तित किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि इन केन्द्रों में मानसिक शांति एवं भाव परिवर्तन हेतु प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों के साथ अहिंसात्मक रोजगार का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

गरीबों का मसीहा बन रहा है अहिंसा प्रशिक्षण
सज़्पूर्ण देश में संचालित 352 केन्द्रों में हजारों लोग बने आत्मनिर्भर

लाडनूं 3 नवज़्बर।

अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ की अनुशासना में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के द्वारा सज़्पूर्ण देश के 352 केन्द्रों में संचालित अहिंसा प्रशिक्षण गरीबों का मसीहा साबित हो रहा है। इन केन्द्रों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले हजारों महिला पुरुष स्वरोजगार का नि:शुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन चुके हैं। कौमी एकता की मिशाल बने इन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में निर्माण की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाने पहुंचे पंजाब, हरियाणा, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रांतों के लोगों के बयानों ने यह साबित कर दिया कि अहिंसा प्रशिक्षण का नया फार्मूला देकर आचार्य महाप्रज्ञ मानव उत्थान का चिंतन रखने वाले जीवंत संत हैं।

मुनि जयंत कुमार ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने जब अहिंसा यात्रा के दौरान ग्रामीण जनता के दर्द को देखा एवं आधुनिक उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से बनते हिंसक संस्कारों से भावी पीढी को बचाने के लिए अहिंसा प्रशिक्षण का नया आयाम देश के सज़्मुख प्रस्तुत किया। आज उस चिंतन पर कार्य करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ के अनुयायियों ने गरीबों के बीच नई क्रांति ला दी है। उन्होंने बताया कि अहिंसात्मक रोजगार प्रदर्शनी में प्रत्येक स्टॉल पर प्रदर्शित सामग्री लोगों में

विशेष आकर्षण पैदा करने वाली है। शिक्षक संसद के राष्ट्रीय संयाजक भीखमचन्द नखत ने बताया कि इस प्रदर्शनी में वस्तुएं सेल के लिए नहीं रखी गई थी पर फिर भी लोगों ने खूब पसंद किया और हजारों रुपयों की वस्तुएं खरीदकर ले गए। उन्होंने बताया कि अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों में सिलाई, बुनाई, उपयोग में नहीं आने वाली वस्तुओं से कलाकृतियां बनाना, मोमबत्ती निर्माण करना और कज़्यूटर का प्रशिक्षण देने के साथ घरेलु रखरखाव एवं रसोई में काम आने वाली वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है, इन केन्द्रों के द्वारा लाखों विद्यार्थियों को आदतों के परिष्कार के प्रयोगों का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

आर्थिक चिंतन में नैतिकता की समाविष्टि है - सापेक्ष अर्थशास्त्र : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं 3 नवज़्बर।

वर्तमासन युग की सबसे बड़ी समस्या अनैतिकता है, जिसके कारण कोई भी व्यवस्था सफल नहीं हो पाती है। अनैतिकता के कारण पदार्थ के विकास का स्तर तो बढ़ रहा है किंतु मानवीय विकास का स्तर निरंतर गिरता ही जा रहा है। अर्थार्जन की पद्धति में अनैतिकता के कारण ही आज शोषण और भ्रष्टाचार संपूर्ण जगत में व्याप्त है। सापेक्षता की दृष्टि से विचार करें तो वर्तमान विकास पदार्थ सापेक्ष है, मानव सापेक्ष नहीं। इसलिए आज वृहद स्तर पर उत्पादन होने के बाद भी मनुष्य संत्रस्त है, अशांत है, दु:खी है इसलिए अर्थव्यवस्था का स्वरूप ऐसा हो जिसमें अहिंसा, करूणा और संवेदनशीलता का संगम हो।

ये विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र विषयक चतुर्थ संगोष्ठी के समापन कार्यक्रम में व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा सापेक्ष अर्थशास्त्र नैतिक मूल्यों पर अवलंबित एक ऐसी अवधारणा है जो आर्थिक जगत में नैतिकता की समाविष्टि पर बल देती है। समापन समारोह में समाजविज्ञानी आर.एल. वाजपेयी ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया। प्रो. दयानन्द ज़ार्गव ने इस संगोष्ठी की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए कहा - हम सापेक्ष अर्थशास्त्र के विकास की ओर बढ़ रहे हैं और एक दिन लक्ष्य की प्राप्ति अवश्य हो जाएगी। मुनि अक्षय प्रकाश ने ऐसी जीवन शैली को प्रस्तुत किया जो आज प्रत्येक व्यक्ति के सुखी होने के लिए आवश्यक है। समापन व्यक्तव्य प्रसिद्ध आर्थिक विश्लेषक नाथूरामका ने प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्थिक विकास मानव केन्द्रित होना चाहिए।

इससे पूर्व संवाद के तृतीय सत्र में समणी रमणीय प्रज्ञा एवं समणी शशि प्रज्ञा ने आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा प्रशिक्षण के प्रकल्प के द्वारा सापेक्ष अर्थशास्त्र की क्रियान्विती का रूप प्रस्तुत किया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुज़लाल ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की चर्चा गरीबी एवं अमीरी के संदर्भ में की। सोहनराज तातेड़ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की सिद्धांत और प्रयोग पर अपना वक्तव्य दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की महामंत्री वीणा बैद ने 'आओ गांव चले' परियोजना के अन्तर्गत संपादित सापेक्ष अर्थशास्त्र से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण किया। प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने उपरोक्त प्रस्तुतियां का उल्लेख करते हुए नक्सलवाद के संदर्भ में सापेक्ष अर्थशास्त्र की चर्चा की। उन्होंने कहा कि वास्तविक सुख उपभोग में नहीं वरन संयम में है। इस राष्ट्रीय संवाद में आईआईएलएम इंस्टीटयुट के विद्यार्थी अजय शर्मा, कुलदीप मिश्रा, सतीश कुमार, नितेश भारद्वाज, स्वनिल शर्मा, शिवानी और रूचिका डांगी ने सापेक्ष अर्थशास्त्र के विविध पहलुओं की प्रस्तुति पर्यावरण प्रदूषण, व्यावसायिक नीतिशास प्रबंधन, विपणन, जनसंज़्या वृद्धि आदि के संबां में दी। व्यवसायी यशवंत रामपुरिया ने ज़यरहित और भयसहित अर्थव्यवस्था के संबंध में अभय सापेक्ष अर्थव्यवस्था का स्वरूप प्रस्तुत किया। आईआईएलएम के निदेशक डॉ. अशोक बाफना ने संपूर्ण सत्रों की संयोजना की। संगोष्ठी की सफल संयोजना में मुनि अक्षय प्रकाश एवं बजरंग जैन का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

सापेक्ष अर्थशास्त्र करेगा ग्लोबल वार्मिंग का समाधान – मुनि सुखलाल

मुनि सुखलाल ने जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में आयोजित सापेक्ष अर्थशास्त्र पर चतुर्थ संवाद में उपस्थित विद्वानों को संबोधित करते हुए कहा कि अर्थ के दो पहलू हैं – उपभोग व प्रतिष्ठा। यदि दोनों में संतुलन व समन्वय नहीं होगा तो ग्लोबल वार्मिंग, हिंसा, भुखमरी, गरीबी आदि कष्टों से मानवमात्र नहीं बच सकता। इसके लिए उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से दी जा रही ट्रेनिंग के बारे में भी जानकारी दी।

मुनि महेन्द्रकुमार ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सुख को उपभोग से जोड़कर देखना ही दुःखों का मूल कारण है। जिन देशों में स्वास्थ्य सेवाएं हैं वहां का एच.डी.आर भी अच्छा है परन्तु वहां भी मनुष्य आंतरिक रूप से खुश नहीं है। अर्थशास्त्र बिना मनुष्य के अधुरा है और सापेक्ष अर्थशास्त्र मानवमात्र को केन्द्र बिन्दू मानता है। अन्तरात्मा को अर्थशास्त्र से जोड़ के देखना है।

जैन विश्व भारती के सहयोग से सापेक्ष अर्थशास्त्र पर आयोजित चतुर्थ संवाद की पूर्व भूमिका पर प्रकाश डालते हुए मुनि जयंत कुमार ने बताया कि वर्तमान समाज में बढ़ती हिंसा उपभोगवादी मनोवृत्ति व आर्थिक विषमताओं को उजागर कर रही है। इस आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने एक नई आर्थिक अवधारणा ‘सापेक्ष अर्थशास्त्र’ को साकार किया है। जो संतुलित सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक व आर्थिक विकास पर आधारित है। यह अवधारणा अर्थशास्त्र के आर्थिक चिंतन को धर्म की आध्यात्मिकता से जोड़ती है तथा अर्थशास्त्र में मानवीय मूल्यों का समावेश करती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे महावीर के अर्थशास्त्र की संज्ञा देते हुए, अवधारणा का प्रतिपादन किया। अवधारणा की यात्रा का प्रथम पड़ाव नई दिल्ली में 2005 के चतुर्मास के दौरान आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ‘इकोनोमिक्स ऑफ नॉन वायलेंस : विजन ऑफ ए सस्टेनेबल वर्ल्ड’ था, तत्पश्चात् द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ‘अहिंसा का अर्थशास्त्र: सांस्कृतिक मूल्य व नैतिकता’ उदयपुर में हुआ। तृतीय सज़्मेलन ‘अहिंसा का अर्थशास्त्र के संदर्भ में सापेक्ष अर्थशास्त्र’ विषय पर 2008 में आचार्य महाप्रज्ञ के चतुर्मास के दौरान जयपुर में हुआ जो महत्त्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध हुआ, जहां सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा पर गहन चिंतन मंथन हुआ। ‘सापेक्ष अर्थशास्त्र अवधारणा के विकास में देश–विदेश के विद्वतजनों, समाज विज्ञानियों व अर्थशास्त्रियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुनि जयंत ने बताया कि राजनीतिक क्षेत्र से एस.के. सिंह, तत्कालीन राज्यपाल राजस्थान, गुलाबचन्द कटारिया, गृहमंत्री राजस्थान सरकार, शिवचरण माथुर, तत्कालीन राज्यपाल, आसाम, पं. नवलकिशोर शर्मा, तत्कालीन राज्यपाल गुजरात, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र से पदमभूषण प्रो. वी.एस. व्यास, प्रो. आशीष बोस, अन्तर्राष्ट्रीय डेमोग्राफर व प्रधानमंत्री सलाहकार व सदस्य, राष्ट्रीय जनसंज़्या आयोग, डॉ. अशोक बाफना, निदेशक आईआईएलएम, यदुवेन्द्र माथुर, योजना सचिव, राजस्थान सरकार, प्रो. उदय पारीक, प्रबंधन विशेषज्ञ, प्रो. योगेश अटल, प्रबुद्ध समाज वैज्ञानिक, प्रो. माइकेला हाइनी, मनोविज्ञान विभोग, यॉर्क विश्वविद्यालय, कनाडा, सिस्टर जयंती, ब्रह्माकुमारी वर्ल्ड स्प्रिच्युलिटी युनिवर्सिटी, यूरोप, प्रो. मार्सिया रियोक्स, निदेशक, यॉक विश्वविद्यालय, कनाडा, प्रो. एल.एन. नाथूरामका, प्रबुद्ध अर्थशास्त्री, आर.एल. वाजपेयी, समाज वैज्ञानिक, प्रो. दयानन्द भार्गव, वैदिक विद्वान बनार्ड ई. मीयर, प्रबुद्ध अमेरीकी अर्थशास्त्री आदि आचार्य महाप्रज्ञ के अर्थशास्त्र के नये प्रारूप पर कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने बताया कि संगोष्ठी के आयोजन में एस.आई.डी., एन.एच.आर.डी., जयपुर चेप्टर, आई.सी.ई.एन.एस., अणुव्रत आई.सी.सी.आर एअईसीटीई व जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कार्यकर्ताओं का श्रम नियोजित हो रहा

है। जैन विश्व भारती के अहिंसा भवन में आयोजित चतुर्थ संवाद में पहुंचे ज़्यातनाम अर्थशास्त्री नाथुरामका आर.एल. वाजपेयी, प्रो. दयानन्द भार्गव ने सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा को आज जनता की अवधारणा बताते हुए इसे विश्व व्यापी बनाने पर जोर दिया।

समणी शशिप्रज्ञा, समणी रमणिय प्रज्ञा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की मंत्री श्रीमती वीणा बैद, प्रो. एस.आर. तातेड़, डॉ. अशोक बाफना आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

द्वितीय सत्र में आईआईएलएम के विद्यार्थी अजय शर्मा, कुलदीप मिश्रा, सतीश कुमार अहिर, नितेश भारद्वाज, स्वपनिल शर्मा, शिवानी शर्मा, सुदीप पूनिया व सामेदत्त ने इस विषय पर अपने विचार रखे। विद्यार्थियों ने आज की अराजकता, हिंसा, गरीबी आदि समस्याओं को दूर करने के लिए कहा कि सामाजिक व नैतिक मूल्यों को महत्त्व आज के युवा को समझना होगा। इसी के साथ प्रौद्योगिकी का सही व उपयुक्त रूप में उपयोग युवा को समझना होगा। इसी के साािा प्रौद्योगिकी का सही व उपयुक्त रूप में उपयोग करना होगा। शिक्षा में नवीनीकरण के साथ-साथ इसके सिर्फ डिग्री बांटने का साधन बनने से रोकने की जरूरत है। मितव्ययता का महत्व व प्राकृतिक संसाधनों का समुचित सदउपयोग की जरूरत है व प्रत्येक मनुष्य को अपनी ये जिज़्मेदारी समझनी होगी।

रोजगार प्रशिक्षण प्रदर्शनी का किया अवलोकन

लाडनूं 2 नवज़्बर। स्थानीय जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा परिसर में राष्ट्रीय अणव्रत शिक्षक संसद द्वारा देश स्तर पर संचालित विभिन्न अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों तथा महिला मण्डल अहमदाबाद, हैदराबाद व लाडनूं के रोजगार प्रशिक्षण प्रदर्शनी का गहन अवलोकन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ तथा युवाचार्य महाश्रमण ने किया। अवलोकन के समय अनेक संत एवं समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। अवलोकन क्रम में संस्था के राष्ट्रीय संयोजक भीखमचन्द नखत तथा विशिष्ट मार्गदर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने विभिन्न केन्द्रों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी के विशिष्ट तथ्यों का उल्लेख किया तथा केन्द्र प्रभारियों ने भी रोजगार प्रशिक्षक विषयक प्रेरणादायी तथ्यों तथा जरूरतमंदों द्वारा किए जा रहे अर्थोपार्जन तथा इससे समाज में बढते सकारात्मक सोच को रेखांकित किया। आचार्य महाप्रज्ञ तथा युवाचार्य महाश्रमण ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के केन्द्रों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी को भी देखा तथा प्रसन्नता व्यक्त की। स्वरोजगार सृजन की दिशा में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों की बढती उपयोगिता राष्ट्र स्तर पर शांति सदभावना लाने की दिशा में कारगर सिद्ध हो रही है ऐसा भाव प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अनेक महानुभावों ने प्रकट किये।

8वां अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर 5 से

लाडनूं 2 नवज़्बर।

प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा जैन विश्व भारती प्रांगण में प्रेक्षाध्यान के प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के निर्देशन में 8वां अन्तर्राष्ट्रीय शिविर का आयोजन 5 नवज़्बर से 13 नवज़्बर तक किया जायेगा। उक्त जानकारी देते मुनि जयंतकुमार ने बताया कि इस शिविर में रसिया, यूक्रेन, कजाकिस्तान, जर्मनी, जापान, अमेरिका, हॉलेण्ड, कूर्गन आदि देशों के 70 जन भाग लेंगे।

मुनि जयंत ने बताया कि प्रेक्षाध्यान के प्रति सात समुद्र पार के लोगों में विशेष आकर्षण है। विदेशी लोग इस शिविर से प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेकर अपने देशों में प्रेक्षाध्यान के सेंटर संचालित करते हैं। इन सेंटरों में सैकड़ों व्यक्ति प्रेक्षाध्यान का अज़्यास करते हैं। मुनि ने बताया कि प्रेक्षाध्यान प्रतिस्पर्द्धात्मक जिंदगी में तनाव से छुटकारा का

सशक्त माध्यम है। इसकी उपयोगिता को जितना विदेश में रहने वाले इस्तेमाल करते हैं उतना इस देश के नहीं करते। इन शिविरों के द्वारा विदेशी सैलानियों में भारत की अध्यात्म भूमि के प्रति सकारात्मक सौच विकसित हुई है और वे वर्ष में कई बार आने का मानस रखने लगे हैं।

इन शिविरों के अलावा भी प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में विदेशी प्रवास करते हैं

जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह

जीवन विज्ञान से होता है बालकों का निर्माण : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 2 नवम्ब्रर।

पीछले शनिवार को जीवन विज्ञान दिवस पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथत, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में जीवन विज्ञान अकादमी की तरफ से पुरस्कृत किया गया। जैन विश्व भारती के मंत्री भीखमचन्द पुगलिया, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलसचिव जे.पी.एन. मिश्रा ने युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित इस पुरस्कार वितरण समारोह में एकांकी प्रस्तुति में प्रथम स्थान प्राप्त जिनकूदेवी जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय द्वितीय लाडमनोहर बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय को तृतीय मारवाड़ विद्यालय के मोमेन्टों एवं पुरस्कार राशि प्रदान की। गीत गायन प्रतियोगिता में विमल विद्या विहार की छात्रा शिखा दूगड़ प्रथम, द्वितीय विवांक द्विवेदी एवं तृतीय लाडमनोहन विद्यालय की प्रिया खटेड़ रही। रेली में प्रथम जिनकूदेवी जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय, द्वितीय लाडमनोहर बाल निकेतन माध्यमिक विद्यालय तृतीय महावीर जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय ने जीता। निज़्बन्ध में सुमन प्रथम, चंन्द्रकांता द्वितीय, पूजा जांगीड़ तृतीय स्थान पर रही।

प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका डॉ.जे.पी.एन मिश्रा, अरूणा सोनी, सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. जिनेन्द्र जैन व सीताराम लेड़ी थे।